ॐ ह्रीं अर्हम् नमः

श्री श्री १००८ श्री विजय शांति सूरीश्वरजी भगवंत

गुरु चालीसा, वंदना एवं पचीसी

श्री शांति सेवा संघ, मांडोलीनगर

2016 मूल्य : रु. 7/-

ॐकार विन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव, ॐ काराय नमो नमः॥

नवकार महामंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्व साहूणं
एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्॥

प्रार्थना

जय अन्तरयामी जय अन्तरयामी।
पार करो शिवधामी जय अन्तरयामी॥
तुं परमेश्वर साचो वल्लभ तुं मारो।
दुःखड़ा दूर करनारों जय अन्तरयामी॥
तुं ब्रह्मा तुं विष्णु कृष्ण कन्हैयो तुं।
जगवंदन जिनवर तुं जय अन्तरयामी॥
विश्व थकी तुं न्यारो, ब्रह्म जगवनारो।
सकल जगतने प्यारो जय अन्तरयामी॥

घट घट व्यापक स्वामी नाथ निरंजन तुं
भव भंजन भयहर तुं जय अन्तरयामी।।
पुण्य प्रतापे बालक तुम शरणे आयो।
अखिलपति कहेवायो जय अन्तरयामी।।
निभव्या तेम निभवजो दीनबंधु दाता।
अनाथ जन गुणगाता जय अन्तरयामी।।
एक मने आधारो, बालक हूं थारो।
किंकर पार उतारो जय अन्तरयामी।।

गुरु चालीसा

रचयिता : उगमराज खिंवसरा

गुरु चरणों में नमन कर, श्रद्धा प्रेम बसाय।
सुमरु माता शारदे, रचना ज्योति जगाय॥
वाणी में गुरु की कथा, पल-पल उतरे आय।
हृदय भक्ति से पूर्ण हो, निशि-वासर सरसाय॥
जय-जय विजय शांति सूरीश्वर,
कीर्ति सुने सब जल-थल नभचर। 1।
नमो महायोगी हितकारी,
तिहुं लोक फैली उजियारी। 2।

नमो परम साधक सुखदाई,
अनगिनत भक्त और अनुयायी ।3।

शुभ्र रूप छवि अधिक सुहावे,
दरस करत जन अति सुख पावै ।4।

उन्नत ललाट मुख मुस्कावै,
दीर्घ केशराशि मन भावै ।5।

नयनों में प्रकाश सा छाया,
अंग - अंग आलोक समाया ।6।

मांडोली में करत निवासा,
कृपा सिन्धु दीजै मन आसा ।7।

वरद-हस्त में सब सुख साजै,
जाको देख काल डर भाजै ।8।

अणु-अणु में है ज्योति तुम्हारी,
हर्षित हो पूजै नर-नारी ।9।

योग साधना से तप कीन्हों,
काम क्रोध जीति सब लीन्हों ।10।

महिमा अमित जगत विख्याता,
करूणा सागर पालक त्राता ।11।

जो जन धरे गुरु का ध्याना,
ताको सदा होय कल्याणा ।12।

सुमरण से पुलकित हिय होई,
सुख उपजै दुःख दुरमति खोई ।13।

कल्पवृक्ष जैसी तव छाया,
गुरुदेव की अद्भुत माया ।14।

तुम्हारी शरण गहै जो कोई,
तरे सकल संकट सो सोई ।15।

सरस्वती शतमुख से गावै,
तुम्हारी गाथा पार न पावै ।16।

तुमहि जानि कछु रहे न शैषा,
रोग दोष कछु रहे न क्लेशा ।17।

तुम्हारी शक्ति दिपै सब ठांई,
गुरु-लीला सब ठौर समाई ।18।

जापर कृपा तुम्हारी होई,
तापर कृपा करे सब कोई ।19।

दारिद्र मिटै कटै धन पीरा,
गुरु जयनाद सुनै गंभीरा ।20।

गृह अशान्ति चित्त चिन्ता भारी,
नासै शांति सूरी भय हारी ।21।

पिता भीमतोला बड़भागी,
विश्व-ज्योति जिनके घर जागी ।22।

अमर हुई माता वसुदेवी,
जन्मा सगतोजी जन सेवी ।23।

विजय शांति योगी अवतारा,
ॐ ह्रीं अर्हं नमः पुकारा ।24।

तीर्थ विजय से दीक्षा लीन्ही,
फिर तप साधन में गति कीन्ही ।25।

वन आबू में गुफा निवासी,
सिद्ध किये बीजाक्षर रासी ।26।

जहाँ गये जनता गद् गद् थी,
मेटी परम्परा पशु वध की ।27।

श्रीफल को मन की वाचा दी,
केसरिया तीर्थ की रक्षा की ।28।

गांव-गांव की कलह मिटाई,
'युग प्रधान' की पदवी पाई ।29।

अहिंसा का संदेश सुनाया,
जीवन धर्म त्याग विकसाया ।30।

अन्तर्यामी रुप लुभाया,
भक्तों को बहु बार बचाया ।31।

हृदय परिवर्तन विश्वासी,
तृष्णा भयी तुम्हारी दासी ।32।

जप-तप के नियमित आचारी,
वश में हुई सिद्धियां सारी ।33।

शब्द सरोवर को पहचाना,
अनुभव का अनुरंजन जाना ।34।

तब जनहित का मार्ग सुझाया,
साधु वेश में दिव्य समाया ।35।

योगीराज जितने जग मांही,
कोई शांति सूरी सम नाही ।36।

जो भी चरणों में चित्त लावे,
सारे सुफल मनोरथ पावै ।37।

बल विद्या सद्गति के दानी,
तुम संग कोऊ न पावे हानि ।38।

जो नर पढ़े नित्य चालीसा,
निखरे पारस धातु सरीखा ।39।

गुरुदेव की समझे भाषा,
उसकी पूर्ण होय अभिलाषा ।40।

अन्तस में गुरु की छवि, अब कुछ कहा न जाय।
'शांति सेवक' अर्पण करे, तन मन धन हरषाय॥
शांति सूरी गुरु का चरित, जैसे सिन्धु अथाह।
मिली प्रेरणा तब हुआ गरिबा का निर्वाह॥

गुरु धुन

ॐ गुरु ॐ गुरु ॐ गुरु देव
जय गुरु जय गुरु जय गुरु देव
शांति गुरु है तेरा नाम,
सबको दर्शन दो भगवान। ॐ गुरु....
शांति गुरु है तेरा नाम,
सबको शांति दो भगवान। ॐ गुरु....
पतित पावन दीन दयाल
सबके तुम्ही हो रखवाल। ॐ गुरु....

आत्म उद्धारक तेरा नाम,
सबको सन्मति दो भगवान । ॐ गुरु...

आत्म उद्धारक तेरा नाम,
सबको शान्ति दो भगवान । ॐ गुरु...

सुख करता है श्री गुरु देव
दु:ख हरता है जय गुरु देव। ॐ गुरु....

ॐ शांति ॐ शांति ॐ शांति

वंदना

चरण-कमल में वंदना, करूँ सदा गुरु राज
आत्म उद्धारक आप हो, रखना मेरी लाज!
आहिर कुल अवतार लिया, धन्य मणादर ग्राम
पतित पावन आप हो, शांति सूरी भगवान !
तोला नन्दन आप हो, धन्य वसु देवी मात
विश्व प्रेम संदेश दिया, करुणा मूर्ति नाथ!
शांति नगर में आपका, मन्दिर एक महान्
अनुपम छवि है आपकी, दर्शन से कल्याण !
जग में महिमा आपकी, करुँ सदा गुण-गान
"शांति मंडल" प्रेम से, करे तुम्हारा ध्यान!

''गुरु गुण गीतांजली''

''गुरु गुण गीतांजली'' की रचना ज्योतिषी श्री चुन्नीलाल आशाराम जी भट्ट ''औदिच्य'' द्वारा की गई उनकी मनोभावना है। परम पूज्य गुरुदेव भगवान द्वारा किये हुए उपकारों की जब स्मृति होती है तो प्रेमासुओं की वर्षा हो उठती है, रोम-रोम खड़े हो जाते हैं और हृदय अधीर हो उठता है।

मरुधर मणादर अहिर कुल में भाग्यशाली थे महा,
निर्मल्यता उरमे बसे वह भीम तोलाजी अहा।
जिनके भवन में शुभ समय अवतार जाकर के लिया,
आबू गिरी के प्रखर योगी, शान्ति गुरुवर आप थे ॥1॥

माता पिता कि भक्ति हित के कार्य सत्वर आप थे,
बालक समय मे ही सदा महा धर्म तत्पर आप थे।
मुख कंज सम हर दम छलकता शान्ति के घर आप थे,
आबू गिरि के प्रखर योगी, शान्ति गुरुवर आप थे ॥2॥

कलि-काल में सम कल्प तरुवर विश्व पूजक आप थे,
भव पाप भन्जन् कर्म गन्जन् आत्म रन्जन् आप थे।
वरदान दानी, योग ज्ञानि ओउम ध्यानि आप थे,
आबू गिरि के प्रखर योगी शान्ति गुरुवर आप थे। ॥3॥

उपदेश रस पशु पक्षियों को, भी पिलाते आप थे,
ऊँकार मंत्र का महा औषध खिलाते आप थे।
मरुभूमि में अद्‌भुत अहा! ध्यानि धुरंधर आप थे,
आबू गिरि के प्रखर योगी, शान्ति गुरुवर आप थे ॥4॥

गिरते हुए अंध कुण्ड में से जन बचाते आप थे,
भूले हुए कई प्राणियों को राह बताते आप थे।
डूबे हुए भी जीव का उद्धार करते आप थे,
आबू गिरि के प्रखर योगी शान्ति गुरुवर आप थे ॥5॥

अभिमान क्रोध लोभ से तो दूर कोसों आप थे,
रतराग द्वेष में नहीं, पाखंड त्यागी आप थे।
नहिं लिप्त माया मोह से ही! विरह विरक्त आप थे,
आबू गिरि के प्रखर योगी शान्ति गुरुवर आप थे ॥6॥

तुम धैर्य धारी पूर थे सद्धर्म मद में चूर थे,
निष्काम थे निष्पाप थे भर विश्व में मशहूर थे।
हाँ कर्म अरिदल काटने को वीरवर एक आप थे,
आबू गिरि के प्रखर योगी शान्ति गुरुवर आप थे ॥7॥

माधुर्यता मुख में हति अति मधुर भाषी आप थे,
वर्षा सुधासि होति जब उपदेश देते आप थे।
अज्ञान तिमिर नाश करने तिमिर हर सम आप थे,
आबु गिरि के प्रखर योगी शान्ति गुरुवर आप थे ॥8॥

गुरु राज के भव जहाज थे ऋषिराज थे नर इन्द्र थे,
मुनि राज थे महाराज थे आचार्य थे योगिन्द्र थे।
भगवान थे नर रत्न थे महाआत्मरुप अवतार थे,
हे शान्ति सूरिश्वर आप ही हाँ शान्ति के आगार थे ॥9॥

शान्ति का संदेश जग में था सुनाया आपने,
वह भक्ति का शुभ पंथ, जनको था दिखाया आपने।
दु:ख दु:खी जनका देख करके था मिटाया आपने,
निज भक्त जनको कष्ट पथ से था हटाया आपने ॥10॥

मदवान हो धनवान हो कुलवान हो अघवान हो,
जन साथ हो या जामात हो नर नाथ हो विख्यात हो।
तो भी उसे उपदेश देकर के झुकाया आपने,
महा-मंत्र इस ॐकार को रटना सिखाया आपने ॥11॥

"गौरांग" जाति के मनुज वे धर्म को नहिं जानते,
आगम निगम श्रुति पुस्तकों को वे नहिं थे मानते।
लेकिन पिलाकर देशनामृत दूर कर अज्ञान को,
ओंकार मन्त्रका उन्हें, ध्यान धरना सिखाया आपने ॥12॥

भाव भक्ति से जनो का उर विभूषित कर हरा,
उस द्वेष मायां मोह को, सद्भाव फिर उर में भरा।
निज धर्म का रास्ता दिखाकर पथ छुड़ाया पाप का,
उपकार वह कैसे भूलेंगे? भक्त जन हम आपका ॥13॥

अति दर्शनार्थ के लिए गुरु आप रहते थे जहाँ,
मिल देश अरु देशान्तरों से लोग आते थे वहाँ।
शुभ देशनाऽमृत पानकर जन मस्त होते थे सहु,
थे देवगण भी तृषित उर फिर मानवों की क्य कहुँ ॥14॥

देख कर बैठे अकेले आपको गुरुवर कभी,
खरगोश बन्दर हिरन चीते व्याघ्र और वनराज भी।
कौकिलादि हंस सारस साथ पक्षी मिल सभी,
देशनामृत पान करने दौड़कर आते तभी ॥15॥

तप किया था शक्ति भर के हे महात्मन्! आपने,
था बनाया भक्ति करके मुक्ति जीवन आपने।
संसार माया जाल से निजको बचाया आपने,
ॐकार का एक ध्यान करके मोक्ष पाया आपने ॥16॥

लब्धि अतिहि ताप तप घट में भरीथी आपने,
नवनिद्धिये वसु सिद्धिये बस में करि थी आपने।
रहती थी हरदम साथ रिद्धि, नाथ! तो भी आपने,
ॐकार का एक ध्यान करके मोक्षा पाया आपने ॥17॥

अर्बुदगिरी को छोड़ करके स्वर्ग जाना ठानकर,
उस वक्त ही महा मंत्रवर ॐकार का शुभ ध्यान धर।
लेली समाधि आपने हाँ! पूर्ण आयु जानकर,
के जावसे अब मोक्षमें यह स्वार्थिदुनिया जानकर ॥18॥

उस दिन हजारों सैंकड़ों जन थे वहाँ संयोग से,
थे विरह व्याकुल सब जने वहाँ संत के अवयोग से।
वाजिन्त्र अगणित बाजते, था नाद जय जय हो रहा,
वर्णन अरें उस वक्त का, नहीं जीभ से जाएं कहा ॥19॥

उस वक्त पौधेपुष्प और वृक्ष भी उस स्थान के,
शोकाग्र थे दु:खमग्न थे पशु पक्षी उस उद्यान के।
उन्मनें से वृक्ष मानो जान पड़ते थे सभी,
सब छोड़कर खाना पीना व्याकुळ हो बैंठे सभी ॥20॥

''वे कर रहे थे प्रार्थना भगवान से कर जोड़ कर-
कि हे दयालु! हे मयालु!! आत्मय कर दे अमर!
आवाज वहाँ यह आ रही थी शान्ति हा! शान्तिगुरो!!
वह विरह ज्वाला छा रही थी देश भर में घरघरो ॥21॥''

हम गौरव अपना खो चुके सुन विश्व तजना आपका,
हम हाथ इनसे धो चुके फिर दर्श पाना आपका।
हम आँख भरकर रो चुके मृत देख कर शव आपका,
पर बीज उर में बो चुके एक मंत्र रटना आपका ॥22॥

वह स्थान माँडोली नगर में, है समाधि आपकी,
हे धन्य श्रीमान् भक्तजन् पर जो कृपा थी आपकी।
उनके अतुलित द्रव्य से वह दिव्य छत्री आपकी,
क्या ही बनी है रम्य? जहाँ मूर्ति बिराजित आपकी ॥23॥

इस विश्व में फिर आप आकर दर्श हमको दीजिये,
निशदिन तड़फते हैं उन्हों के दुःख को हर लीजिये।
निज भक्त जनपर आपके शुभ दृष्टिमय कर हो सदा,
हे शान्ति गुरुवर आपकी! जय हो सदा! जय हो सदा ॥24॥

उर प्रेम में अति मस्त होकर काव्य या कुछ भी लिखें,
गुणमत्त अरु तुक बंदियों का ध्यान कैसे रह सके?
भुज बीश शत सितचैत्र की थी पूर्णमाशी सौम्यदा,
''औदिच्य'' कृत गीतांजली यह पूर्ण है अब सौम्यदा ॥25॥